(IJPS) 2016, Vol. No. 2, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

GANDHI'S THOUGHTS ON IMPROVING THE CONDITION OF DALITS

Dr. Manoj Singh Yadav

Asst Prof, Dept of History, Kashi Naresh Govt PG College, Gyanpur, Bhadohi

गाँधी जी के दलितों की स्थिति में सुधार संबंधी विचार

डॉ0 मनोज सिंह यादव

असिस्टेंट प्रोफेसर–इतिहास, काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ज्ञानपुर, भदोही।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत राश्ट्रपिता महात्मा गाँधी एक सच्चे नायक, नेतृत्व कर्ता होने के साथ–साथ एक समाज सुधारक भी थे। गाँधी जी एक ऐसी धधकती ज्वाला के समान थे जिसने स्वतंत्रता के पूर्व अपनी लपटों से अंग्रेजी सत्ता को जलाकर राख कर दिया तथा स्वतंत्रता के बाद समाज में व्याप्त ऊँच नीच आदि की भावना को जलाने का काम किया गाँधी जी ने षूद्रों की स्थिति को सुधारने के लिए एक ऐसा आंदोलन षुरू किया जिसने भारतीय जनमानस को ऊपर से नीचे तक झकझोर दिया।

20 वीं सदी नारीजागरण एवं दलितोद्वार की सदी थी उस सदी में कांग्रेसी आन्दोलन ने भी जोर पकड़ा था। इस सदी में राजनीतिक तथा सामाजिक दोनों ही आन्दोलनों को सफलता मिली। दलितों की स्थिति को सुधारने का बीड़ा महात्मा गाँधी ने उठाया जिन्हें बीसवीं सदी में दलित एवं सवर्ण हिन्दुओं के मध्य निकटता स्थापित करने तथा उनके दृश्टिकोणों में परिवर्तन लाने में महान सफलता मिली । सामाजिक न्याय के आदर्षों के प्रति गाँधी जी का विषेश लगाव था तथा इसलिए उन्होने भारत में दलितों की मुक्ति के लिए धर्मयुद्ध चलाया तथा उसके प्रति होने वाले अत्याचार, अन्याय तथा उत्पीड़न का विरोध किया। एक क्रांतिकारी की तरह उन्होने दलितों की स्थिति सुधारने की दिषा में तेजी से कार्य किया तथा इसे कार्य रूप में परिणत करने के लिए खादी से भी अधिक महत्व दिया।

(IJPS) 2016, Vol. No. 2, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

महात्मा गाँधी अपने राजनीतिक जीवन के प्रारम्भ के पूर्व ही गीता में भगवान कृश्ण द्वारा दिये गये समता के सिद्धान्त के पोशक थे। गाँधी जी ने अपने प्रारम्भिक राजनीति के आंदोलन चम्पारण सत्याग्रह (1917) तथा खेड़ा सत्याग्रह (1918) का नेतृत्व केवल राजनीतिक उद्देष्यों की पूर्ति के लिए ही नहीं किया था अपितु आम लोगों विषेशकर खेतिहर मजदूरों तथा निम्न वर्गीय मजदूरों की आर्थिक समस्या के निदान के ध्येय से भी किया था। गाँधी जी प्रारम्भ से ही सामाजिक विशमता के सिद्धान्त के विरोधी थे उनके इसी विचार को स्पश्ट करते हुए अमेरिकी पत्रकार फिषर महोदय ने लिखा है कि ''दक्षिण अफ्रीका में समानता करने के लिए गाँधी जी ने जो संघर्श किया था उसी सामाजिक आर्थिक समानता के लिए इन्होने भारत में भी संघर्श किया। वे भारतीयों के बीच कठोर असमानता को सहन नही कर सकते थे।''

गाँधी जी ने 1921 में दलित सुधार को कांग्रेस का एक हिस्सा बना दिया। कांग्रेस ने हिन्दुओं से अपील किया कि वे अष्पृष्यता की भावना का अंत करें तथा दलितों के उद्धार के लिए कार्य करें। 1931 के कांग्रेस के करांची अधिवेषन में बिना जाति पद्धति पर विचार किये सभी सरकारी नौकरियों में सभी को समान अवसर तथा सार्वजनिक सुविधाओं सड़को, कूपों विद्यालयों आदि के उपयोग का समान अधिकार प्रदान करने पर बल दिया गया।

1932 के उत्तरार्द्ध में जब गाँधी ने 1921 में दलितों के सुधार के लिए कुछ रचनात्मक ठोस कार्य करने के बारे में जेल में सोच रहे थे उसी समय ''रैम्जे मैकडोनाल्ड'' द्वारा दलितों के लिए पृथक निर्वाचन सम्बन्धी साम्प्रदायिक व्यवस्था ने गाँधी जी का ध्यान हरिजनों के कल्याण पर केन्द्रित कर दिया। गाँधी जी ने 20 सितम्बर 1932 ई0 को पृथक निर्वाचन के प्रष्न पर आमरण अनषन षुरू कर दिया। 24 सितम्बर 1932 को सवर्ण हिन्दुओं एवं दलित नेताओं के मध्य वार्ता द्वारा पूना समझौता हुआ। इस समझौते द्वारा पृथक मतदान की योजना समाप्त कर दी गई तथा सवर्ण हिन्दुओं द्वारा सार्वजनिक कूपों, मंदिरो, विद्यालयों में हिन्दुओं के समान अधिकार प्रदान कर दिये गये। इस समझौते में संयुक्त निर्वाचन प्रणाली की व्यवस्था की गई। मंदिरों को अछूतो के लिए खोलने सम्बन्धी विधेयक केन्द्रीय विधान मंडल में 'रंगा अय्यर' द्वारा प्रस्तुत किया गया। गाँधी जी के प्रयासों से दलित को समाज का अस्पृक्ष्य अंग न समझकर उन्हे बराबरी का दर्जा दे दिया गया। दलितों का उत्थान ही अब गाँधी का उद्देष्य बन गया। अछूतों की दषा सुधारने, उन्हे तकनीकी षिक्षा चिकित्सा आदि की सुविधाएं देने के लिए गाँधी

जी द्वारा सितम्बर 1932 ई0 में हरिजन सेवक संघ की स्थापना की गई। 1933 ई0 में गाँधी जी के निर्देषन में पूना से हिन्दी तथा गुजराती भाशाओं में हरिजन नामक सत्ताहिक पत्र का प्रकाषन प्रारम्भ हुआ। इससे उन मंदिरों, कूपों, विद्यालयों की सूची रहती थी जो दलितो के लिए खोल दिये गये थे। गाँधी जी ने 1933 से अगस्त 1934 तक 12500 मील की हरिजन यात्रा की और उन्होने कहा कि ''अछूतो के कल्याण का कार्य तपस्या है जिसे हिन्दुओं को अस्पृष्यता के पाप के प्रक्षालन हेतु करना होगा।''

गाँधी जी के प्रयासों से सरकार द्वारा दलितों को छात्रवृत्तियाँ भत्ते तथा कई अन्य षिक्षण सुविधाएं प्रदान की गई। नौकरियों में उनकी नियुक्ति के लिए विषेश प्रबंध किया गया और सार्वजनिक संस्थाओं में उनके विषेश प्रतिनिधित्व के प्रष्न पर उदारता से से विचार किया। इन कार्यों में सरकार ने दलित समुदाय के बीच षिक्षा एवं सहयोग के प्रचार के निमित्त व्यवस्थित प्रयास करना प्रारम्भ किया। गाँधी जी के इन्ही प्रयासों के कारण दलित समाज के निचले वर्ग में राश्ट्रवाद के तत्वों के प्रसारित करने में सहायता की। गाँधी जी के रचनात्मक कार्यों के कार्यक्रमों ने अछूतों के भीतर ही कुछ अतिवादी तत्वों का ध्यान आकर्शित करना प्रारम्भ किया।

देष के वर्तमान संविधान में अनुसूचित जातियों, पिछड़े एवं दलित वर्गों को जो संरक्षण प्राप्त हुआ उन सब की नींव महात्मा गाँधी द्वारा ही रखी गई थी। यह गाँधी जी के भगीरथ प्रयास का ही परिणाम था कि वे दलित जो पहले सवर्णों के समान होने की बात कभी सोंच भी नहीं सकते थे वे सवर्णों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने के योग्य बना दिये गये थे। गाँधी जी का दलितोद्वार मानव महत्व पर आधारित था। वे जानते थे कि जब व्यक्ति का महत्व बढ़ेगा तभी दलितोद्वार आंदोलन सफल होगा। उन्होने अपने जीवन के अंतिम दिन दलितों के मुहल्लों में गुजार कर मानव के लिए एक उच्च आदर्ष प्रस्तुत किया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि राश्ट्र के इस नायक ने भारतीय समाज के उस हिस्से को जो अपनी पहचान बनाने के लिए तरस रहा था उसे सवर्णों के समकक्ष ले जाने में गाँधी जी ने अपने आप को अर्पित कर दिया। गाँधी जी के प्रयासों से ही दलितो को वर्तमान समय में प्राप्त स्थान की प्राप्ति हुई। गाँधी जी ने दलितों को प्रत्येक भारतीय कार्य में भागीदार बनाया।

(IJPS) 2016, Vol. No. 2, Jul-Dec **e-ISSN: 2455-6270; p-ISSN: 2455-7455**

गाँधी जी ने अपने उपदेषों के माध्यम से सवर्णों में दलितों के प्रति सम्मान की भावना बनाने में सफलता पाई।

संदर्भ ग्रन्थः—

1—भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास : ताराचंद्र

2—भारत का स्वतंत्रता संघर्श : विपिन चन्द्र

3—आधुनिक भारत : सुमित सरकार

4—गाँधी राइज टू पावर : इण्डियन पालिटिक्स ज्यूडिथ ब्राउन

5—हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया : आर0 सी0 मजूमदार

6—भारत का मुक्ति संग्राम : अयोध्या सिंह

7—आधुनिक भारत का इतिहास : जगन्नाथ प्रसाद मिश्र

8—मेरे सपनों का भारत : महात्मा गाँधी

9—महात्मा गाँधी जीवन और दर्षन : रोमां रोला

10—ग्राम स्वराज्य : मोहन दास करमचन्द्र गाँधी

11— आधुनिक भारत का इतिहास : एम0एस0जैन

REFERENCES

1. Bhartiya Swatantrata Andolan ka Itihaas: Tarachandra
2. Bharat ka Swatantra Sangharsh: Vipin Chandra
3. Adhunik Bharat: Sumit Sarkar
4. Gandhi Rise to Power: Indian Politics, Zudith Brown
5. History of Freedom Movement in India: R. C. Majumdar
6. Bharat ka Mukti Sangram: Ayodhya Singh
7. Adhunik Bharat ka Itihaas: Jagannath Prasad Mishra
8. Mere Sapno ka Bharat: Mahatma Gandhi
9. Mahatma Gandhi Jeevan or Darshan: Roman Rola
10. Gram Swarajya: Mohan Das Karamchand Gandhi
11. Adhunik Bharat ka Itihaas: M. S. Jain